हे गुरुदेव! मैं इस संसार सागर में विभिन्न तंत्र प्रयोगों से ग्रसित हूं, मेरे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होते है। मेरे भीतर की तंत्र शक्ति शुष्क हो रही है और दूसरों के द्वारा तंत्र प्रयास से मेरा जीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है। मेरी वाणी का कीलन हो गया है, मेरे मंत्र सार्थक नहीं हो पाते, मेरे द्वारा कहे गये शब्दों का प्रभाव नहीं पड़ता। मेरा मन, मेरा वचन, मेरी बुद्धि और मेरी शक्ति एक अदृश्य बंधन में बंध गई है। आप ही मेरे इन सब बन्धनों को एक प्रहार से नाश कर सकते है। आप ही मुझे पुनः स्वतंत्र व्यक्तित्व बना सकते है। जिससे मेरा तंत्र स्वयं का हो और मैं अपनी तंत्र शक्ति से अपने घर परिवार के लिये श्रेष्ठ गति से कर्म कर सकूं।

जब साधक की यह पुकार आती है तब गुरु उसे विशेष शक्तिपात करते है और वह शक्तिपात है 'तंत्र उत्कीलन' जिसे त्रिपुरा शक्ति संचरण उत्कीलन विद्या कही गई है।

तंत्र की जटिल बाधाओं के समाधान सद्गुरुदेव के मार्गदर्शन में ही संभव है। 'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा' के माध्यम से सद्गुरुदेव शिष्य-साधक में तीव्र शक्ति प्रदान करते हैं।

- साधक के चारों ओर एक सुरक्षा कवच निर्मित होता है। यह कवच नकारात्मक शक्तियों, दुष्प्रभावों और अनिष्ट संकल्पों से रक्षा करता है।
- साधक की आन्तरिक शक्ति जागृत होती है। भीतर की दुर्बलता, भय, संशय और नकारात्मकता दूर कर आत्मविश्वास प्रदान करती है।
- कार्यों में गति आती है, निर्णय क्षमता बढ़ती है और रुके हुए कार्य आगे बढ़ने लगते हैं।
- जीवन में संतुलन स्थापित होता है। मानसिक तनाव, भय, असुरक्षा और निराशा का प्रभाव कम होने लगता है।
- अदृश्य अवरोधों का शमन होता है। इससे मंत्र सिद्धि, ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

- तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा (प्रति चरण) - 3100/-

बिना दीक्षा और बिना उचित ज्ञान के तंत्र प्रयोग करना साधक के लिए हानिकारक भी हो सकता है